

ASHA ARCHIVES

648

ಶ್ರೀ ೨೫ ೧೬

ॐ ह्रीं स्रूं मारतचय भैरवा
यः सत्रुत आतनाय आदित्याय
वते घस्वा हो ॐ
सत्रुको घर अघारि पारिः गोवरको क-

चौरी वनाईः रुषको कापि माः गोवरको
कचौरी राखीः धुप वति गरी सो गोवरको
कचौरी मा पुजा गर्नुः आथ सुते वति जो
र ८ दिनुः अर्ग मा पंचा मीत राखी

मंत्रपरी

सुजेलाई ३ फेरा आकासमा फलेज सौग
रो अर्ग दिनुः फेरी अर्गमाः गाई को दुड
लावाः रातो क विरको छुलाः सर सिउः

अमलाः अर्गमा हालीः मंत्रपरी गो
वरको क चोरीमा अर्ग दि द्यो^प लाई दि
नुः सत्रुको सरुप सशः सुजेलाई न
मसकारगनु मेरा कार्जे सिदि हो भनी
अर्ग दि दा दुई हातले अर्ग समाति दिनु

माथोकोसनीचरवारगरनु

आडितेवारसनीचरवाररुबमापैलेगरे
जसोकोयागरीपुजागर्नुप्रव

होमः

ॐ रँ ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गीरे ममरक्षरक्ष

ममअ मुकं गृहन्दे ५ य २ ममश

नुं भक्षस्त्वाहा ॐ जप ८००० आईत

वारगर्नु

॥

॥

॥

लावा १ मरिच १ कपासकोविद्या १ यो

तिनथोकमिलाई ७ तै फेराहो मगर्नुः

सबुकोसरीरमाखतेराभै पाकीकोरीज

सोभै मरदः यकफेरागर्नुअयनभ

ने ति न्ये एस म य हि री त ले गर्नु

माथी को र ई मंत्र गर्नु पर छ

॥ माथी को कर्म गरी । सके पद्धिः पंच मुखी । हन

मान को कठु ज साथ दिन पाथ गरी दि प्र छ ॥

॥

॥

॥

ॐ नमो उ च्या म रे स्वरायेः अ मु क

मु ध्या तये र वि दे ख ये र स्वा हा ॐ १०८

र ग्सी १ मानि स को मा सु १ गी ५ को हा र १

स त्रु को गु १ य ति चार थो क मि ला ई

१०८ फेर जगाई सत्रु को द्वार मागारी दि
नु वौलाहुं छः मने परे सत्रु को घर मा ७
दिन मंत्र परी ऊकी दिनु मर छः ॥ ॥

मान्याः

१ ॐ कालिकुट विखमारौः के ह कु
ट विखमारौः ना भिष ना नि सुख
ना भि सुख ॥ २ ॥ ॐ ॐ ससनामाः
५ वि नृ फकिं ८ दि नृ ची का ल १ १६ सु

के को वि दे धुं गाम निज पनु मरि जा न्द
यो मं च पे ते ते ई स जा रज पनु मं च सि दि
कुं दः १०८ फेर हो म गर्नुः हो म गर्ने जो
का तो ति ह १ मार सि चा म ल १ गा क्रो धू

ये ति मी ला ई हो म गर्नुः वी काल २००० ह
जा रज पनुः ॥ ॥
मा थी को मं च ज पि स के प दि यो त ल को मं
च १०८ ज पनुः ॥ मं च मं कु ल वार वि

बज-मो हो हो विष तेरा भाग हो हो तेरा
भाग हो ॥ यो मंत्र १०८ जपनु ॥ ॥

आकसनगरीतान्त्रः ॥

ॐ श्रीगुरुआपा वज्रजोगीनीकी आ
ग्ना द्मकि द्मकिः नाम रुमरुम
रुं रुं फट्त्वा हाः होम १०८। २१
होम गर्ने सरदा म ॥ नुन १ क पासको ज्वा

७१ रायो १ सरसि ७१ मुला को विद्या १
यति मिलाई हो मग नुः हो मग नै सरदा
महात मातिः ऊरा समेत मिलाई मंच
परी तीन चोति प्रकि स्वाहा भनि अ

अ। गिन मा दोर नुः हाम चार दिन गरे
पदि मुख देखा उनुः फेरी ओली पल
वनी हो मग नुः ज म्वासा थादि नु पुराउ
नु आ फुलाई घर सम आई दाकन आ
ॐ ॥ ॥ ॥

ईसा नतर फका मा हा देव लाई अदि
 वा जगाई पंचा मृत सुगंधी ले पुजाग
 नुरः आऊले आने को का मृ सि डि हो
 मं नी दे मा मा गुः धू मह ले सना
 नगरा उनुः पुजागर्नु गोऊल चुप

इहि म ह दुद धू मिथी सम भाग
 गरी धुप वना उनु सो मंत्र परने वे
 ला मा सो धुप हली ॥ ॐ नमो सि
 वा य सा ना य प्रेता य देव देवा य ई
 सा ना य सुरु भुवा हवे स्यो म ना य
 पापं सो स्थो भव मुन मस्तु ते

नीमको काथ अं गुल को ल्याईः सत्रुको
 विष्टाको ससिवनाई क परमा लेखनुः यी
 तामागारी दिनु ते स्को नाउ था त धु प
 दिनु कृष्णा अष्ट मि वा च नुर ५ सि दि
 नमा सो सत्रुको नाम स म श्री १०८ ज
 प गर्नुः ॐ नमो भगवते सर्वो भुता
 ची पतय विरपा साय नी ल्यो ऊरु

२

राय ५ म्बु अने वी कराली न्य
 ग्रहाये क यो क क्ष भु ते नावे न
 संजरः अ मु कः ५ ह २ प च २
 गृह ना प य २ रुं फे ट्वा हा

॥

॥

॥

नम कि हरिताल तोला १
हरा विष तोला १
पारो सुड तोला १
घू ऊ मारी कोर स सा बल गर्नु

प्रहर १ ति कि या पारी सुकाई च
रिया मा हली मा थी वात सि पि
चुन ले वं च गर्नुः क पर मति गरी सु
का उं नु आ चा चा नि को गु ई था
मा पुत दिनु भ स्र ऊं दः सो भ स म ता

प्राप्तोत्ता १ गलाई: यक पुर की द्वा
श दिनु लया रहुं द्वा: ॥ सिव जी के
आरधा नागनु ॥

आरधा नागनु

648

ASHA ARCHIVES

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 देवगुरुः श्री कृष्णः
 श्री गुरुः श्री कृष्णः
 श्री गुरुः श्री कृष्णः

ॐ गुरु आशा आहु क ह्वा हा
 मय वस चार १०८ ई का सका लो
 सि या हे ज्वा ल ल पु य लो का लो ले व
 ल ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ २ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ ३ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ पाण्डवो द्रुपद उवाच ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ ४ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ पाण्डवो द्रुपद उवाच ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ ५ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

The image shows a close-up of a manuscript page with two columns of text in Devanagari script. The text is written in a dark ink on aged, yellowish-brown paper. The script is somewhat faded and the paper shows signs of wear and discoloration. The columns are separated by a vertical line.

फलवर्धकको औसदि

का उद्घा को गुडि

फलवर्धकको औसदि

का उद्घा को विया को गुडि १
जो सुरो १ कंथ को १
वल् १ नाग वला १
सो फू १ यती को गुडि सवै महल
गवानु १ पुरुष को बल १ वीर्य वर्धक ॥

स प्रे ताल म आना कावी या १ सा ठी
धान का चावल यक तो ला जो पुह
स म ह ल ग मा ली स चो तत मा
जो धां च लो वल वान ह प्र ल

ॐ किं हि श्री ह्रीं श्रीं हि फट स्वाहा
नीलोकपराशरमलानकोडीगार
लेसत्रको मल्य श्री २१ फेर
गादिमलान मागारनु

ॐ हिं का लि कां डे वि अमुक
वि च्व सनाय हं हिं स्वाहा

ऊमाशं या के प्रजाया य सत्रया म दुषवीय
स्वाय मालसा मसानयानलि
न सत्रया ह्र दयके स्वापाखने
कोयः यागुन की थु र्वथु सथ

मैं च या ना च सु प्वा ल स क थु
गायः नु गल स क थु गाय
प्रा थ स क थु गाय स नु सि र्

ॐ ॐ ॐ कौं कौं। तौ र न मार चारै सौ
कि नीः स नु म र न है उ थो तो पु ज
कौं उ न ले तो खि ह

पेरा ७ पेरा ७॥॥ ये स मैं च लो ना थी न
भ व को सि या १ आ ह को वि दे मा मा
रे दि नुं ज ष मा ती

[illegible]

...वाली सुगु...
...ना...
...
...
...
...
...

...
...

...
...
...
...
...

कुसंग कुदि निरुदे कुसंगरे
हिदिनु जोगरी नरुसक म
मा भंगरे विरुदे नरुसक
मसनाधानो दया पुत्रा भोग दिया स
पुत्रा दे स हो न विदे यमा भंगनु

सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥
सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥
सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥
सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥

सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥
सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥
सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥
सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥

सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥
सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥
सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥
सर्वत्र कुलपतिः ॥ जगत्पतिः सर्वत्र ॥